'पथिक' - काव्य - कवि - श्रीरामनरेश त्रिपाठी
शास्त्री द्वितीय खण्ड - अ० द्वि० - पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न:- 'पथिक' काव्य किस प्रकार का सन्देश देता है?

उत्तर:- त्रिपाठी जी 'पथिक' काव्य के माध्यम से समस्त देश-वासियों को राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का सन्देश देते हैं। कवि का कहना है कि हमें सब कुछ खोकर भी देश की आजादी हासिल करना चाहिए। साथ ही-साथ कवि का यह भी कहना है कि हमारा देश-प्रेम विश्व-प्रेम में किसी भी स्थिति में व्यवधान उत्पन्न न करें। हमारे देश की परम्परा रही है कि सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित हो।

2. प्रश्न:- देशवासियों का पहला कर्तव्य क्या है?

उत्तर:- प्रकृति प्रेमी कवि त्रिपाठी जी अपने 'पथिक' खण्ड काव्य के माध्यम से कर्तव्य का बोध कराते हैं। कवि का कहना है कि देश के समस्त नागरिकों का पहला कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की रक्षा एक सजग प्रहरी की तरह करें। देश का प्रत्येक नागरिक निष्ठा और ईमानदारी पूर्वक अपने दायित्व का निर्वाह करें। देश का बच्चा-बच्चा वीर प्रहरी और सिपाही हो। इसके लिए हमें परिश्रमी और चरित्रवान बनना पड़ेगा। इस प्रकार हम अपना कर्तव्य पालन करके एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

3. प्रश्न:- 'गाँधीवाद' के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर:- 'पथिक' काव्य का कवि गाँधीवादी है। गाँधीवादी -

शेष आगे

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०—पत्र

जयद्रथ-वध — कार्य खण्ड

कवि — श्री मैथिलीशरण गुप्त

कर पार गिरि-वन-नद यदपि कैलाश को हम जा रहे।
पर दृश्य आगे के स्वयं मानो निकट सब आ रहे।
गोविन्द! पीछे तो अहो! देखो तनिक दृग फेर के,
तम कर रहा है लीन-सा क्रम से जगत को घेर के॥

भावार्थ- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कह रहे हैं कि अर्जुन श्रीकृष्ण के साथ कैलाश पर्वत पर जा रहे हैं और वहाँ की शोभा का वर्णन कर रहे हैं अर्जुन कैलाश पर्वत के मार्ग के सुन्दरता का वर्णन कर रहे हैं। वे कह रहे हैं हे गोविन्द हम लोग पर्वत, वन और नदियों को पार करते हुए यद्यपि कैलाश पर्वत की ओर जा रहे हैं, परन्तु हमको ऐसा लग रहा है मानो आगे के सभी दृश्य स्वयं ही हमारे निकट आते चले जा रहे हों। हे भगवान आप भी तो अपनी आँखें फेर कर देखो कि अंधकार बारी-बारी से सारे संसार को घेर-घेर कर अपने में लीन करता जा रहा है।

इस पद्यांश के द्वारा कवि मैथिलीशरण-गुप्त अर्जुन के साथ गोविन्द के कैलाश पर्वत पर जाने के क्रम में अर्जुन के मन में उठने वाले प्रश्नों का मार्मिक चित्रण किये हैं। मार्ग में जो दृश्य उपस्थित हुआ है उसे अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण को सहज रूप में बता रहे हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 05/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

दर्शन में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। कवि कहता है कि आज संसार में साम्यवाद अपना प्रभाव बढ़ाते जा रहा है। जिसके, कारण उग्रवाद द्रुत गति से बढ़ता जा रहा है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे रहा है। गाँधीवादी विचारधारा से ही हम विश्व में शान्ति स्थापित कर सकते हैं। हिंसा से हिंसा का कभी अन्त नहीं होता है। सम्पूर्ण संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए हम सभी को गाँधीवादी दर्शन को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

डॉ० देवचरण प्रसाद 05/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० क० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ